वचन कह्या ते मनमां धरो, रखे अधखिण पाछा ओसरो।
आ पोहोरो छे कठण अपार, रखे विलंब करो आ वार।। १८ ।।

धनी जो वचन कहते हैं उनको हृदय में धारण करो और आधा पल के लिए भी उनके वचनों से विमुख मत होना। यह समय बड़ा कठिन है, सावधान रहने का है। इसलिए इस बार अब देर मत करो क्योंकि धनी दूसरी बार आये हैं।

आ जोगवाई छे जो घणी, सहाय आपणने थया धणी।
बेठ्या आपण मांहें कहे, पण साथ माहें कोई विरलो लहे।। १९ ।।

यह सुन्दर समय (चर्चा, कलियुग, मनुष्य तन, भारत खण्ड तारतम ज्ञान, आदि) प्राप्त हुआ है और धनी भी अपने मददगार हो गए हैं। वह अपने बीच बैठकर (मेहराज ठाकुर के तन में) चर्चा सुनाते हैं, किन्तु साथ में से कोई-कोई ही ग्रहण करते हैं।

साथ मांहें अजवालूं थयूं, पण भरम तणूं अंधारूं रह्यूं।
ते टाल्यानो करूं उपाय, तो मनोरथ पूरण थाय।। २० ।।

सुन्दरसाथ ने तो चर्चा सुनकर धनी की पहचान कर ली, परन्तु शास्त्रों के तर्क में ज्ञानी लोगों को, विद्वानों को अन्धकार ही रहा, उसको भी टालने का मैं उपाय करती हूं, जिससे उनको भी धनी की पहचान होकर उनकी मनोकामना पूर्ण हो जाय।

जे मनोरथ मनमां थाय, ततखिण कीजे तेणें ताय।
आ जोगवाई छे पाणीवल, आपण करी बेठा नेहेचल।। २१ ।।

यह सुन्दर अवसर जिसे हम अखण्ड समझ बैठे हैं, पल भर का है, इसलिए मन में जिस शुभ कार्य की इच्छा आए उसे तुरन्त कर डालें।

नेहेचल जोगवाई नहीं एणे ठाम, अधखिणमां थाय कई काम।
इंद्रावती कहे आ वार, निद्रा नव कीजे निरधार।। २२ ।।

यह सुन्दर अवसर (मनुष्य तन) अखण्ड नहीं है। आधे ही पल में हालात बदल जाते हैं, इसलिए श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि इस बार आराम से मत बैठो, अर्थात् सोते मत रहो (जागो अणे जगाओ)

॥ प्रकरण ॥ २ ॥ चौपाई ॥ ११२ ॥

राग मारू

भूडां जीव जागजे रे
कांई धणी तणें चरण पसाय, तू भरम उड़ाडजे रे।। टेक १ ।।

मोहजल (माया का ब्रह्माण्ड) तथा माया की पहचान कर उससे बचने का उपाय बताने के बाद अब इस पापी जीव को जागने का रास्ता दिखाया जा रहा है। उसे सम्बोधन किया गया है कि धनी के चरणों की कृपा से बेशकी का ज्ञान मिल गया है, इसलिए इस वाणी से अपनी शंकाओं का निवारण कर जाग जा।

आपण निद्रा केम करूं, निद्रानो नथी लाग।
भरमनी निद्रा जे करे, कांई तेहेनो ते मोटो अभाग।। २ ।।

हे सुन्दरसाथजी! वाणी मिलने पर भी यदि हमारे संशय मिटे नहीं तो यह हमारी बदनसीबी है। अब हमारे भूलने का समय नहीं है, इसलिए अब हमें माया में नहीं भूलना चाहिए।

Nijanand App

आ जोगवाई छे जो आपणी, नहीं आवे बीजी वार।
हाथ ताली दीधे जाय छे, भूडा कां न करे हजी सार।। ३ ।।

यह शुभ अवसर जो अब हमें प्राप्त हुआ है यह दुबारा मिलने वाला नहीं है। पल मात्र में समय निकल जाएगा, इसलिए हे पापी जीव ! तू अभी भी विचार (अपनी संभाल) क्यों नहीं करता?

धणी रे आपणमां आवियां, भूंडा कां नव जागे जीव।
पेरे पेरे तूंने प्रीछव्यो, तूं हजी करे कां ढील।। ४ ।।

हे पापी जीव! धनी अपने बीच में आए हैं, तू क्यों नहीं जागता। तुझे बार-बार समझाया जा रहा है, फिर तू क्यों ढील कर रहा है?

धणिऐ धणवट जे करी, तू तां जोने विचारी तेह।
आ पापनी ने परहरी, तू कां न करे सनेह।। ५ ।।

श्री राजजी महाराज ने अपना धनीपना किया है, इसलिए तू जरा विचार करके देख कि इस दुष्ट माया को छोड़कर अपने धनी से प्यार क्यों नहीं करता?

आपण ने तेडवा आविया, आ दुस्तर माया मांहें।
ओलखी ने कां ओसरे, भूंडा एम थयो तू कांए।। ६ ।।

ऐसी दुष्ट माया में से निकालने के लिए धनी अपने बीच में पधारे हैं। हे पापी जीव! तू पहचान करने के बाद भी ऐसा क्यों हो गया है और क्यों भूल गया है?

धणिए आपणसूं जे करी रे, तू तां जोने विचारी मन।
कोडी ते हाथथी परी करी, तूने दीधूं छे हाथ रतन।। ७ ।।

प्रियतम ने अपने ऊपर जो कृपा की है जरा उसे मन से विचार करके देख। कोडी (माया) से छुड़ाकर तेरे हाथ में अनमोल रत्न (मूल घर परमधाम के पच्चीस पक्ष) दिया है।

जीवडा तू धारण केही करे, भूंडा घूट्यो दिन अनेक।
जोवंतां जोगवाई गई, भूंडा हजिए तू कांय नव चेत।। ८ ।।

हे पापी जीव ! तू गहरी नींद (माया में लिप्त) में क्यों पड़ा है? तूने बहुत समय व्यर्थ में गंवा दिया। देखते-देखते अनमोल समय निकल गया है। फिर भी तूं क्यों सावधान नहीं होता है?

आपण ऊपर अति घणी रे, दया करे छे आधार।
आपणे काजे देह धर्या, भूंडा हजीए तूं कां न विचार।। ९ ।।

हे पापी जीव! अपने धनी ने अपने ऊपर अपार कृपा करके अपने लिए माया में तन धारण किया है। इसका तू क्यों विचार नहीं करता?

भरम भूंडो तमे परहरो, जेम थाय अजवालुं अपार।
वचन वालाजी तणे, तू मूलगां सुख संभार।। १० ।।

हे पापी जीव ! तू संशय छोड़ दे ताकि तुझे ज्ञान प्राप्त हो जाए (धनी की पहचान हो जाए)। तू धनी के वचनों से, जो वाणी में कहे हैं, अखण्ड परमधाम के सुखों को याद कर।

Nijanand App

आ वालो ते आविया, ए सुखतणा दातार।
आपण मांहें तेहज बेठा, जोई अजवालुं संभार।। ११ ।।

सदा सत सुख के देने वाले धाम धनी दूसरी बार आए हैं और अपने बीच में (मेहराज ठाकुर के तन में) बैठे हैं। इनकी वाणी से इनकी पहचान कर।

दुर्मती तू कां थयो, हूं तो पाडूं ते बुंब अपार।
आंहीं आव्या न ओलख्या, पछे केही पेरे मोंहों उपाड।। १२ ।।

हे मूर्ख ! तू ऐसा क्यों हो गया है? मैं तो ऊंचे स्वर से पुकार रही हूं कि धनी यहां आए हैं। तूने उनकी पहचान क्यों नहीं की? उनके चले जाने पर बाद में कैसे मुंह ऊंचा करेगा?

आंख उघाडी जो जुए, जीव लीजे ते लाभ अनेक।
आंही पण सुख घणां माणिए, अने आगल थाय वसेक।। १३ ।।

अन्दर की आंख खोलकर विचार करो तो बहुत लाभ मिलने वाला है। यहां पर बैठे-बैठे बहुत सुखों का अनुभव मिलेगा तथा आगे और भी अधिक सुख मिलेंगे।

आ अजवालूं जो जोइए, जीव तारतम मोटो सार।
वालाजीने ओलखे, तो तू नव मूके निरधार।। १४ ।।

इस जागृत बुद्धि के ज्ञान को यदि विचार कर देखा जाय तो तारतम (धनी की पहचान) ही सबसे बड़ा सार है। तू धनी की पहचान करके इन्हें कभी भी न छोड़ना।

वालो वदेसी आवी मल्या, कांई आपणने आ वार।
दुख मांहें सुख माणिए, जो तू भरमनी निद्रा निवार।। १५ ।।

धनी हमें इस बार दूसरे देश (माया के ब्रह्माण्ड) में आकर मिले हैं, इसलिए तू शंका को मिटाकर इस दुःख के संसार में भी अखण्ड सुखों का अनुभव कर।

आ जोगवाई छे खिण पाणीवल, केटलूं तूने केहेवाय।
पण अचरज मूने एह थाय छे, जे जाण्यूं धन केम जाय।। १६ ।।

यह सुन्दर अवसर (मानव तन) पल भर का है। यह तुझे कितनी बार समझाएं, मुझे तो बड़ी हैरानी हो रही है कि जानकर भी हम अखण्ड धन को गंवा रहे हैं।

आगल आपणे सूं कर्यूं, ज्यारे अजवाले थई रात।
आ तां वालेजीए वली कृपा करी, त्यारे तरत थयो प्रभात।। १७ ।।

पहले मुझ से क्या भूल हुई जिसके कारण ज्ञान का उजाला होने पर भी अन्धकार हो गया (श्री देवचन्दजी का धामगमन हो गया) यह तो धनी ने दूसरी बार कृपा की है और तत्काल ही ज्ञान का उजाला कर दिया (श्री मेहराज ठाकुर के तन में आ बैठे)।

एवडी वात देखी करी, ते तां जोयूं तारी दृष्ट।
हजी तू भरममां भूलियो, तूने केटलूं कहूं पापिष्ट।। १८ ।।

इतनी बड़ी बात जो तूने अपनी आंख से देखी है, फिर भी तू संशय में भूला पड़ा है। तुझे कितना बड़ा पापी (नीच-दुष्ट) कहूं?

Nijanand App

अजवाले वालो ओलख्या, त्यारे पाछल रह्यूं सूं।
जाणी बूझीने मूढ थयो, भूंडा एम थयो कां तूं।। १९ ।।

ज्ञान के उजाले से तूने धनी की पहचान कर ली। अब पीछे क्या बाकी रहा? तू जान-बूझकर मूर्ख बनता है। तू ऐसा नीच क्यों हो गया?

पेरे पेरे में तूने कह्यूं रे, सुण रे धणीना वचन।
अधखिण वालो न वीसरे, जो तू जुए विचारी मन।। २० ।।

मैंने तुझे धनी की वाणी सुनने के लिए अनेक प्रकार से कहा। अब तू यदि मन से विचार कर देखे तो तू धनी को एक पल भी भुला नहीं सकेगा।

अनेक वचन तूने कह्या, मान एकनो करे विचार।
अर्ध लवे तारो अर्थ सरे, भूंडा एवडो तू कां केहेवराव।। २१ ।।

तुझे मैंने अनेक वचन कहकर समझाया। तू उनमें से एक वचन का भी विचार कर ले तो उसके आधे शब्द से ही तेरा कार्य सिद्ध हो जाएगा (जन्म सफल हो जाएगा)। हे पापी ! तू फिर इतना अधिक क्यों कहलवाता है?

हवे रे तूने हूं जे कहूं, ते तू सांभल दृढ करी मन।
पचवीस पख छे आपणा, तेमां झीलजे रात ने दिन।। २२ ।।

अब मैं तुमसे जो कहती हूं उसे मन में दृढ़ता लाकर सुनो। पच्चीस पक्षों का परमधाम अपना घर है। रात-दिन उसी का चिन्तन करो।

ए मांहेंथी रखे नीसरे, पल मात्र अलगो एक।
मनना मनोरथ पूरण थासे, उपजसे सुख अनेक।। २३ ।।

एक पल भर के लिए भी इन पच्चीस पक्षों में से चित्त को मत हटाओ। तुम्हारा मनोरथ पूर्ण हो जाएगा और अनेक सुखों की प्राप्ति होगी।

साख्यात तणी सेवा कर रे ओलखीने अंग।
श्री धाम तणा धणी जाणजे, तू तां रखे करे तेमां भंग।। २४ ।।

इनके तन को ही धाम का धनी जानकर साक्षात् सेवा करो और इनसे अपने चित्त को मत हटने दो।

मुख थी सेवा तूने सी कहूं, जो तूं अन्तर आडो टाल।
अनेक विध सेवा तणी, तूंने उपजसे तत्काल।। २५ ।।

यदि तू अपने मन की भ्रान्ति हटाकर पहचान कर ले तो तुझे अपने आप ही धनी की सेवा करने की चाह उत्पन्न हो जाएगी। मुझे सेवा करने के लिए कहने की आवश्यकता नहीं रहेगी।

पेहेले फेरे आपण आवियां, ते तो वाले कह्यूं छे विवेक।
ते तां लाभ लईने जागियां, हवे आपण करूं रे विसेक।। २६ ।।

पहली बार हम ब्रज में आए थे। उसका वर्णन श्री देवचन्द्रजी ने (वालाजी ने) किया, जिससे हम होश में आए। अब उससे भी अधिक हम करके बताएंगे (माया को छोड़ने का उद्यम)।

Nijanand App

पेहेले फेरे थयूं आपणने, गौपद वछ संसार।
एणे पगले चालिए, जो तू पहेलो फेरो संभार।। २७ ।।

पहली बार ब्रज से रास में जाने के लिए हम भवसागर को एक छोटे-से गड्ढे के समान समझकर पार कर गए (घर, परिवार, सगे सम्बन्धियों को त्यागकर चले गए)। उसी प्रकार उसका ध्यान करते हुए हम इस बार भी भवसागर से पार चलें।

एटला माटे आ अजवालूं, वालेजीए कीधूं आ वार।
नरसैयां वचन प्रगट कीधां, कांई वृज तणा विचार।। २८ ।।

इतने के वास्ते ही धनी ने इस बार याद दिलाई है कि संसार कैसे छोड़ना है। नरसैयां के वचनों में भी ब्रज की लीला के विचार प्रगट किए हैं।

कहे इंद्रावती नरसैयां वचन, जो जोइए करीने चित।
धणिए जे धन आपियूं, कांई करी आपणने हित।। २९ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि नरसैयां के वचनों को भी यदि चित्त में विचार कर देखें तो धाम धनी ने अपनी भलाई के लिए ज्ञान का अमूल्य धन दिया है।

।। प्रकरण ।। ३ ।। चौपाई ।। १४१ ।।

मोहजल से सावधान कर, माया से छूटने का उपाय बताकर, जीव को जागने का ज्ञान देकर अब क्या करना है, बतलाया जा रहा है।

राग धनाश्री

प्रेम सेवा वाले प्रगट कीधी, वृज तणी आ वार।
वचन विचारीने जोइए, कांई नरसैयां तणा निरधार।। १ ।।

ब्रज में हमने वालाजी को प्रेम से कैसे रिझाया था, वह ढंग इस बार बतलाया है। यदि नरसैयां के वचनों को देखें तो हमें यह निश्चय हो जायेगा।

श्रीधाम तणां साथ सांभलो, हूं तो कहूं छूं लागीने पाय।
जे रे मनोरथ कीधां आपणे, ते पूरण एणी पेरे थाय।। २ ।।

हे मेरे धाम के सुन्दरसाथ ! मैं आपके चरणों में लगकर कहती हूं, उसे सुनो। आपने जो चाह की थी वह सब प्रेम और सेवा से ही पूर्ण होगी।

वृजमां कीधी आपण वातडी, ते तां सघली मांहें सनेह।
काम करतां अति घणों, पण खिण नव छोड्यो नेह।। ३ ।।

ब्रज के अन्दर हम सब गोपियों के तन में थे और आपस में अपार प्रेम था। हमने माया के सब काम करते हुए भी अपने धनी से एक पल के लिए भी प्यार नहीं छोड़ा।

विविध पेरे सिणगार जो करतां, मन उलासज थाय।
मनना मनोरथ पूरण करतां, रंगभर रैणी विहाय।। ४ ।।

अपने धनी को रिझाने के लिए अपने मन में उमंग भरकर तरह-तरह से शृंगार करते थे और अपनी मनोकामना पूर्ण करने के लिए आनन्द से रातें बिताते थे।

Nijanand App